कयामत के फितने (मुस्लिम शरीफ)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

हिन्दी किताब एक हजार मुन्तखब हदीसे मुस्लिम शरीफ से रिवायत का खुलासा है.

नोट:- ‘हदीष की रिवायत का खुलासा है’.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1) रावी हज़रत जैनब बिन्ते जहश रदी; एक दिन रसूलुल्लाहﷺ घबराये हुवे इस हाल में निकले की आपका चेहरा सुर्ख था और फरमा रहे थे- 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' अरब के लिये उस शर से हलाकत हो जो करीब आ-चुका हे. आज याजूज-माजूज की दीवार इतनी खुल चुकी हे और आपने अपने अंगूठे और उसके साथ मिली उंगली का घेरा बनाकर बताया. मेने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम अपने अन्दर मौजूद नेक लोगो के बावजूद भी हलाक हो जाएंगे? आपने फरमाया हा, जब फिस्क और गुनाह और बदकारियों की अधिकता हो जाएंगी.

2) रावी हज़रत हफ्सा रदी; रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- इस

बैतुल्लाह से लडने के इरादे से एक लश्कर चढाई करेंगा यहा तक की जब वे ज़मीन के हमवार मैदान में होंगे तो उनके दरमियानी लश्कर को ज़मीन में धंसा दिया जाएंगा और उनके आगे वाले पीछे वालो को मदद के लिये पुकारेंगे, फिर उन्हे भी ज़मीन में धंसा दिया जाएंगा और सिवाय एक आदमी के जो भागकर उनके बारे में इत्तिला देंगा, कोई भी बाकी ना रहेंगा.

वज़ाहत- कयामत की निशानियाँ में से एक निशानी ये भी हे की एक लश्कर को जो बैतुल्लाह को शहीद करने के इरादे से आएंगा तो उसे रास्ते में मदीना मुनव्वरा के करीब एक हमवार मैदान में ज़मीन में धंसा दिया जाएंगा.

3) रावी हज़रत सोबान रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- अल्लाह तआला ने ज़मीन मेरे लिये समेट दिया तो मेने उसके पूरब और पश्चिम को देखा और जहा तक की ज़मीन मेरे लिये समेट दी गई थी वहा तक बहुत जल्दी मेरी उम्मत की हुकूमत पोहुंच जाएंगी, और मुझे सुर्ख और सफेद खज़ाने अता किये गये और मेने अपने रब से अपनी उम्मत के लिये दुआ मांगी की वो उन्हे सूखे के अज़ाब में हलाक ना करे और उन पर कोई ऐसा दश्मन भी मुसल्लत ना करे जो उन सब की जानों की तबाही को

हलाल और जायज़ समझे. और मेरे रब ने फरमाया- ऐ मुहम्मद ﷺ जब में किसी बात का फैसला कर लेता हू तो उसे तब्दील नहीं करता और बेशक मेने आपकी उम्मत के लिये फैसला कर लिया हे की उन्हे सूखे और बारिश की कमी के ज़रिये हलाक ना करूंगा और ना ही उन पर ऐसा कोई दुश्मन मुसल्लत करूंगा जो उन सब की जानों को हलाल और जायज़ समझे, अगरचे उनके खिलाफ ज़मीन के हर तरफ से लोग जमा हो जाए, यहा तक की मुसलमान एक दूसरे को खुद ही हलाक करेंगे और एक दूसरे को कैदी बनाएंगे.

4) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- बहुत जल्दी फितने बरपा होंगे, उनमे बैठने वाला खडे होने वाले से, खडा होने वाला चलने वाले से और चलने वाला दौडने वाले से बेहतर होंगा, जो उन फितनो को देखेंगा वे फितने उसे हलाक कर देंगे, और जिस शख्स को उनसे पनाह की जगह मिल जाए वो ज़रूर पनाह हासिल करले.

वजाहत: ये फितने कयामत के नज़दीक ज़ाहिर होंगे. उन फितनो से अपने आपको बचाना ही अहम कामयाबी हे.

5) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- “कहत ये नहीं हे की बारिश ना हो, बल्की कहत ये हे की खूब बारिश हो लेकिन ज़मीन कोई चीझ ना उगाये."

6) रावी हज़रत आयशा रदी; रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- दिन और रात का सिलसिला उस वकत तक खत्म नहीं होंगा जब तक की लात और उज्जा की इबादत ना की जाए. मेने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! जब अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फरमाई सूरे सफ्फ ६१, आयत ९ तर्जुमा- वो ज़ात जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ भेजा ताकि तमाम दीनो पर गालिब कर दे. चाहे मुश्रिक लोगो को ये नागवार गुज़ारे. तो में ये समझती थी की ये दीन मुकम्मल हो गया (और अब शिर्क ना होंगा). आप ﷺ ने फरमाया- जो कुछ अल्लाह तआला की मर्जी हे वो बहुत जल्दी ज़ाहिर होंगा, फिर अल्लाह एक पाकीज़ा हवा भेजेंगा जिसकी वजह से हर वो शख्स जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होंगा वो मर जाएंगा और जिसके दिल में बिल्कुल भी ईमान नहीं होंगा वो बाकी रह जाएंगा, और वे लोग अपने आबाई दीन (यानी शिर्क) की तरफ लौट जाएंगे.